IJAER/September-October 2024/Volume-13/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

मानस काम दर्शन

डॉ. सुमन जैन

धन्य है ! भारतीय मनीषा, जिसने जीवन के हर पहलू, हर रंग पर विवेकपूर्ण मत दिया है। संस्कार, संस्कृति, धर्म, ईश्वर, विज्ञान पर ही स्पष्ट विचार नहीं दिया, अपितु 'काम' पर उदार दृष्टिकोण से विचार किया है। भारतीय वाङ्मय में काम जैसी शक्तिशाली एवं प्रभावशाली वृत्ति पर सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। पुरुषार्थ चतुष्टय – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष[1] में काम को मोक्ष से पहले रखा गया है। क्योंकि कामनाओं के शमन के पश्चात् ही चित्त स्थिर होता है और एकाग्र चित्त से ही भगवद् प्राप्ति की जा सकती है।

यह भी एक विज्ञान है कि ऋषियों ने मानव जीवन को चार आश्रमों[2] में बांटा। पहले आश्रम में ज्ञान पाएं और स्वयं को सुन्दर, स्वस्थ जीवन जीने के योग्य बनाएं। जीवन के दूसरे आश्रम यानी गृहस्थाश्रम में काम को स्थान दिया गया है। सुयोग्य, अपने अनुरूप जीवनसाथी के साथ धर्मपूर्वक जीवन जीते हुए, अर्थोपार्जन करें और संयमित काम–भोग करते हुए पितृ ऋण को चुकाएं। गृहस्थाश्रम ही शेष तीनों आश्रमों का आधार है और नव पीढ़ी सृजन के माध्यम से सृष्टिचक्र में सहयोगी होने के कारण श्रेष्ठ भी है। गृहस्थाश्रम में संतुलित जीवन जीते हुए, कामनाओं को तृप्त करते हुए, मानव हरि–सुमिरन के द्वारा अपने मोक्ष मार्ग को सुगम बना सकता है।

वैरागी संतों को भी गृहस्थाश्रम की महत्ता का अनुभव होना चाहिए। इस संदर्भ में बड़ा ही प्रसिद्ध उदाहरण है – जगद्गुरु शंकराचार्य का। काशी में जगद्गुरु शंकराचार्य का विदुषी रानी से शास्त्रार्थ हो रहा था। रानी, शंकराचार्य के ज्ञान, तप, तेज के सामने ठहर नहीं पा रही थी। रानी ने एक युक्ति निकाली। उन्होंने गृहस्थाश्रम और काम विषय पर प्रश्न पूछने प्रारंभ कर दिए। शंकराचार्य जी तो ठहरे बाल ब्रह्मचारी, योगी और तपस्वी – उन्हें काम का क्या अनुभव? वे तो इस विषय पर कोरे शून्य। रानी का तर्क था, पूर्ण

[1] मनुस्मृति
[2] भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व – डॉ. श्रीकृष्ण ओझा

ज्ञानी को सभी विषयों का ज्ञान होना चाहिए। शंकराचार्य ने कुछ दिनों का समय मांगा और योग विद्या से राजा के शरीर में प्रवेश कर गृहस्थ सुख का द्रष्टाभाव से दर्शन किया और रानी को शास्त्रार्थ में परास्त किया।

काम शक्ति अपार है। काम का जन–जीवन में, सृष्टि चक्र में महत्वपूर्ण योगदान है। इसी कारण वे 'देवसंज्ञा' से अलंकृत है किन्तु काम का निर्बाध रूप से सेवन घातक है। काम ऊर्जा सृजन का बीज है तो विध्वंस का मूल भी है। यह शक्तिशाली फूलों का बाण है, जिसे विवेक और संयम से प्रयोग किया जाना चाहिए।

भारतीय जनमानस में शिव, राम और कृष्ण समान रूप से आराध्य हैं। शिव लोककल्याणकारी हैं, जिन्होंने काम को जलाया है। कृष्ण लोकरंजक हैं, जिन्होंने महारास लीला के अवसर पर कामदेव को उल्टा लटकाया है और राम लोकरक्षक, मर्यादा, पुरुषोत्तम अनुकरणीय है। राम का आचरण ही जन–जन के लिए आदर्श है अतएव मानव जीवन में काम का समावेश कैसे हो? रामचरितमानस के संदर्भ में काम का दर्शन विचारणीय है –

काम का प्रभाव –

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में काम का बड़ा ही शक्तिशाली चित्र उपस्थित किया है। काम मन की स्वाभाविक एवं प्रभावशाली वृत्ति है जो सभी को समान रूप से व्याप्त करती है। काम के प्रभाव से पशु, पक्षी, मानव तो क्या देव, दानव, मुनि, महात्मा कोई नहीं बच पाता। यथा–

तब आपन प्रभाउ बिस्तारा!
निज बस कीन्हा सकल संसारा।[1]

नियम, जप, तप, ब्रह्मचर्य, वेदों द्वारा निर्धारित सभी मर्यादाएं टूट जाती है। सबके हृदय में काम की इच्छा उत्पन्न हो जाती है। लताएं वृक्षों की ओर झुकने लगती हैं, नदियां समुद्रों की ओर दौड़ने लगती है।[2] गोस्वामी तुलसीदास वर्णन करते हैं कि जड़ (वृक्ष, नदी) की यह दशा है तो फिर चेतन जीवों की स्थिति अवर्णनीय है।

[1] रामचरितमानस, बालकाण्ड, पृष्ठ सं. 82
[2] रामचरितमानस, बालकाण्ड, पृष्ठ सं. 82 – सबके हृदयं मदन अभिलाषा।

जहँ असि दसा जड़न्ह कै बरनी। को कहि सकइ सचेतन करनी।।
पसु पच्छी नभ जल थल चारी। भए काम बस समय बिसारी।।[1]

मरे हुए मन में भी कामदेव जागने लगा। वन को सुन्दरता मन को हरने लगी। ऋतुराज वसन्त प्रगट हुए, प्रफुल्लित फूलों की मादक खुशबू, शीतल मंद पवन, सुंदर भौरों की गुंजार, राजहंस, कोयल, तोतों की रसीली बोली संपूर्ण सृष्टि को ब्रह्ममय नहीं काममय बनाने लगी।[2]

कामशक्ति का ऐसा प्रचण्ड प्रभाव है, तभी तो देवराज ने कामदेव को देवों के देव महादेव के हृदय में हिमतनया पार्वती के लिए प्रेम उत्पन्न हो ऐसा दायित्व सौंपा। यथा –

पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं। करै छोभु संकर मन माहीं।।

गोस्वामी तुलसीदास मानस में स्पष्ट संकेत देते हैं कि कामदेव की प्रचंड शक्ति का प्रयोग लोककल्याण के लिए है। स्वयं कामदेव कहत हैं कि शिव को समाधि से जाग्रत करने पर मेरी मृत्यु अटल है[3] किंतु परोपकार के लिए सर्वस्व त्याग कर देना ही परम धर्म है –

तदपि करब मैं काजु तुम्हारा। श्रुति कह परम धरम उपकारा।।
पर हित लागि तजइ जो देही। संतत संत प्रसंसहिं तेहो।।[4]

शिव ने काम को जलाया है तो जिलाया भी है।[5] उसे जीवन ही नहीं दिया जन–जन के मन में व्याप्त होने का वरदान भी दिया है। पहले से भी अधिक शक्तिशाली बना दिया, क्योंकि काम ने अपने जीवन को परोपकार के लिए होम कर दिया।

राम और काम –

रामचरितमानस में 'काम' विविध अर्थों में प्रयुक्त हुआ है – कामना, कामदेव, मोद, प्रसन्नता, शृंगार, काम भावना, सौन्दर्य, प्रेम–रति रूप में। जहाँ राम है वहां काम नहीं,

---

[1] रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृष्ठ – 83
[2] रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृष्ठ – 84,85
[3] शिव विरोध ध्रुव मरनु हमारा। रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृष्ठ – 82
[4] रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृष्ठ – 82
[5] रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृष्ठ – 86, दोहा 87
अब तें रति तब नाथकर होइहि नामु अनंगु। बिनु बपु व्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंग।।

केवल प्रेम का उदात्त स्वरूप है। गोस्वामी तुलसीदास ने राम के जीवन में काम का संस्पर्श केवल महनीय स्वरूप में ही करवाया ह। परोपकार के लिए जीवन को अर्पण करने वाले, देवत्व विभूषित अनंग देव राम के साथ जुड़ते हैं तो राम का आविर्भाव भी पुत्रकामेष्टि शुभ यज्ञ रूप में प्रतिष्ठित हो जाता है।[1] अद्‌भुत शोभा सम्पन्न है – राम का श्यामल शरीर। कामदेव सौन्दर्य के देवता माने जाते हैं तो उनकी शोभा की तुलना करोड़ों कामदेव से भी अधिक है –

नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।
लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम।।[2]

करोड़ों कामदेवों को भी लज्जित कर दे ऐसी शोभा है राम की। मुनि, ऋषि, स्वयं विदेहराज, स्त्री, पुरुष, बालक उनकी अनुपम छवि को नयनों से पी रहे हैं और सभी के मन में एक ही भाव है –

निरखि सहज सुंदर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फल पाई।।[3]

और भी

बय किसोर सुषमा सदन स्याम गौर सुख धाम।
अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम।।[4]

गोस्वामी तुलसीदास ने 'पुष्पवाटिका' प्रसंग में कंकन, किंकिनि, नुपूर की सुमधुर ध्वनि के माध्यम से राम के हृदय में जो प्रेममयी झंकार उत्पन्न की है वह सहृदयों को मधुर शृंगार रस से आप्लावित कर जाती है। यहां कामदेव शृंगार रस के रूप में निरूपित हुए हैं –

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन राम हृदय गुनि।।
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही।।[5]

मानस में हर सुन्दर वस्तु को काम से जोड़ा गया है। सुन्दर स्त्री है तो काम पत्नी रति सम, सुन्दर हाथी है तो कामगज, श्रेष्ठ घोड़ा है तो काम वाजि, मधुर वाणी है तो काम कोकिल। यहाँ तक बंदनवार तो मानो कामदेव ने फंदे सजाए हैं –

---

[1] पुत्र काम सुभ जग्य करावा। बालकाण्ड
[2] रामचरितमानस – बालकाण्ड, दोहा 146
[3] रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृष्ठ – 201
[4] रामचरितमानस – बालकाण्ड, दोहा 220, पृष्ठ – 202
[5] रामचरितमानस – बालकाण्ड, दोहा, पृष्ठ 209

रचे रुचिर बर बंद निवारे। मनहु मनोभव फंद संवारे।।

मिथिला के सभी घरों पर जो सुन्दर चित्रकारी है, वह भी मानों कामदेव ने बनाई है।

मंगलमय मंदिर सब केरें। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें।।

सहज सुहावने स्वर्ण के मंगल कलश ऐसे लग रहे हैं, मानो कामदेव ने पक्षियों के घोंसले बनाए हों –

छुहे पुरट घट सहज सुहाय। भवन सकुन जनु नीड बनाए।।

दूल्हों के लिए सिंहासन बने हैं, मानो कामदेव ने अपने हाथों से बनाये हैं। जिस श्रेष्ठ घोड़े पर राम जी सवार हैं, मानो कामदेव ही घोड़े क रूप में आया है और राम उन्हें नचा रहे हैं –

बंधु मनोहर सोहहिं संगा। जात नचावत चपल तुरंगा।
जेहि तुरंग पररामु विराजे। वाजि वेषु जनुकाम बनावा।।[1]

मणिमय खंभों में रामसिया की अनुपम छवि मानो कामदेव और रति बहुत से रूप धारण करके राम–सीता का आनन्दोत्सव देख रहे हैं –

मनहु मदन रति धरी बहु रूपा।
देखत राम बिआहु अनूपा।

राम की अनुपम छवि का पान सभी अपनी–अपनी रुचि के अनुसार कर रहे हैं, मानो शृंगार रस ही मूर्तिमन्त हो सुशोभित हो रहा है –

नारि बिलोकहिं हरषि हियँ निज–निज रुचि अनुरूप।
जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप।।

संयोग शृंगार में ही नहीं वियोग में भी काम को सुन्दर अभिव्यञ्जना हुई है। सीता वियोग में राम–लक्ष्मण से कहते हैं कि मुझ विरही को प्रिया वियुक्त जान कामदेव चतुरंगिनी सेना साथ लिये मानो चुनौती दे रहा है –

देखहु तात बसंत सुहावां पियाहीन मोहि भय उपजावा।।

[1] रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृष्ठ – 281

मानस के राम काम विजयी हैं। वे लक्ष्मण से कहते हैं मादक वातावरण हो, मन में प्रियामिलन की कामना हो, काम के शक्तिशाली बाण हो, काम के पूर्ण प्रभाव में जो धैर्य रखे। उनकी कीर्ति की रेखा बन जाती है, वही श्रेष्ठ योद्धा है –

लछिमन देखत काम अनीका। रहहि धीर तिन्ह कै जग लीका।।
एहि के एक परम बल नारी। तेहि ते उबर सुभट सोई भारी।।

राम लक्ष्मण के माध्यम से काम दर्शन बता रहे हैं। राम गुणातीत है, उन्हें तो काम व्याप ही नहीं सकता। कामियों की दीनता और सत्पुरुषों को सावधान करने के लिए ही कामदर्शन का प्रवर्तन किया जा रहा है –

गुणातीत सचराचर स्वामी। राम उमा सब अंतरजामी।
कामिन्ह कै दीनता देखाई। धीरन्ह के मन बिरति दृढ़ाई।।

एक तरह कामी की दीनता दिखला रहे हें तो दूसरी ओर धैर्यवान, विवेकवान को सावधान रहना चाहिए। धीर पुरुषों के मन में इस चर्चा से वैराग्य को दृढ़ किया गया है।

काम से मुक्ति –

काम से सहज ही मुक्ति मिल सकेगी। पहला – निरन्तर राम सुमिरन से, दूसरा – सद्गुरु की अनहद कृपा से। रामचरित मानस में काम, क्रोध, लोभ रूपी बीमारी से छूटने का उपाय भी दिया गया है –

क्रोध मनोज लोभ मद माया। छूटहि सकल राम की दाया।
सो नर इंद्रजाल नहिं भूला जा पर होई सो नट अनुकूला।।

काम विकारों से निवृत्ति तभी मिलेगी, जब राम कृपा करे। निरन्तर राम सुमिरन से मन निर्मल होगा और काम खत्म होगा। यथा –

रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि।
संतत सुनिअ रामगुन सुनिउ रामगुण ग्रामहि।।
एहि कलिकाल न साधन दूजा।

निष्कर्ष –

गोस्वामी तुलसीदास ने मानस में दुर्निवार, सर्वव्यापक, सार्वजनोन शक्ति का बड़ा ही सूक्ष्म, व्यापक चित्रण किया है। काम के प्रत्येक रूप, अवस्था का बड़ा ही मनोहर अद्भुत वर्णन हुआ है। कामदेव शरीर रहित है फिर भी सर्वत्र है। अग्नि में जलकर खाक

हुए और श्रीकृष्ण के पुत्र के रूप में आकार लिया।[1] वे देव संज्ञा से विभूषित है, श्रद्धास्पद है उन्हें तिरस्कृत, निन्दित कैसे किया जा सकता है। यह तो व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह धर्म के साथ, संयम के साथ काम को अपनाता है या काम का दास हो अपनी दुर्दशा को आमन्त्रित करता है।

काम ऊर्जा दीपशिखा के समान है जो दाहक भी है तो प्रकाशक भी है। पतंगा दीपशिखा की दाहकता में अपनी जीवन लीला समाप्त कर देता है तो विवेकवान प्राणी उसी से प्रकाश प्राप्त कर लेता है। कामदेव ने अपनी विराट शक्ति का उपयोग जनकल्याण हेतु किया तभी तो काम–क्रोध, लोभ, मोह की तरह मात्र चित्तवृत्ति नहीं अपितु 'देव' माने जाते हैं। हम मदन, मनोज कुमार तो नाम रखते हैं, किन्तु क्रोध कुमार या लोभ कुमार नहीं क्योंकि काम जीवन में सौन्दर्य, नवजीवन की सृष्टि करता है। वह सौन्दर्य का, प्रेम का देव है। यह मानव पर निर्भर करता है कि वह 'काम' को कितना अपने जीवन में स्थान देता है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष 'पुरुषार्थ चतुष्ट्य' में भी उसकी गणना होती है। पर शर्त है कि धर्मानुसार जीवन में काम आता है तो उपयुक्त है। साहित्य में नवरसों की चर्चा होती है, उसमें रसराज 'शृंगार' रस है और रसराज का स्थायी भाव 'रति' है। जीवन में रस, आनन्द, माधुर्य, शृंगार के साथ ही है। गोस्वामी तुलसीदास 'रामचरितमानस' में राम से राम की प्रियता की मांग कर है तो वो भी किस रूप में? कामीजन जैसे –

कामिहि नारि पिआरि जिमि।
लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर प्रिय लागहु मोहि राम।।

जैसे कामी को स्त्री प्रिय लगती है और लोभी को धन जैसे दान प्यारा लगता है, वैसे ही रघुनाथ जी! हे राम! आप निरन्तर मुझे प्रिय लगिये। अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय जैसे कामी को स्त्री लगती है, वैसे ही राम मुझे प्रिय लगे। रामचरण में रति कामीजन जैसी हो। यह है मानसकार के चिन्तन की उर्वरता और काम शक्ति की अजेयता का अद्‌भुत वर्णन।

[1] जब जदुबंस कृष्ण अवतारा। होइहि हरन महा महिभारा।। कृष्ण तनय होइहि पति तोरा।।
रामचरितमानस – बालकाण्ड, पृष्ठ – 80